

॥ शिवताणुबसुतात्रम ॥

जटाटबीगलज्जलप्रबाहपावितसुथले

गलेबलमव्य लम्बितां डूजङ्गतूङ्गमालिकाम् ।

डमडडमडडमडडमन्निनादडडमरबयं

चकार चणुताणुबं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥ १॥

जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिम्पनिरवरी-

-बिलोलबीचिबल्लरीबिराजमानमूरधनि ।

धगदधगदधगज्जबल्ललाटपट्टपावके

किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिष्णं मम ॥ २॥

धराधरेन्द्रनंदिनीबिलासबन्धुबन्धुर

स्फुरदिगन्तुसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।

कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुरधरापदि

क्वचिदिगम्बरे(क्वचिच्चिदंग्वरे) मनो बिनोदमेतु बसुनि ॥ ३॥

जटाडूजङ्गपिङ्गलस्फुरत्तफगामणिप्रभा

कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधुमुखे ।

मदान्कसिन्धुरस्फुरतुवणुतुरीयमेदुरे

मनो बिनोदमद्भूतं विभरतु भूतभरतरि ॥ ४॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर

प्रसूनधुलिधोरणी बिधुसराङ्घ्रिपीठतूः ।

डूजङ्गराजमालया निवद्धजटाजुटक

श्रिये चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ॥ ५॥

ललाटचत्वरज्जबलदधनङ्गयस्फुलिङ्गता-

-निपीतपङ्गसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।

सुधामयुखलेखया बिराजमानशेखरं

महाकपालिसम्पदेशिरोजटालमस्तु नः ॥ ६॥

करालतालपाट्टिकाधगदधगदधगज्जबल-

दधनङ्गयाहतीकृतप्रचण्डपङ्कसायके ।

धराधरेन्द्रनन्दिनीकूचाग्रचित्रपत्रक-

-प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिरमम ॥ ९॥

नवीनमेघमण्डली निरुद्धदुरधरस्फुरण-

कुहुनिशीथिनीतमः प्रबन्धवद्धकम्बरः ।

निलिम्पनिरवरीधरस्तनोतु कृतिसिन्धुरः

कलानिधानवन्दुरः श्रियं जगद्धुरंधरः ॥ ८॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपङ्ककालिमप्रभा-

-बलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रवद्धकम्बरम् ।

स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं

गजच्छिदांधकच्छिदं तमंतकच्छिदं भजे ॥ ९॥

अखरब(अगरब)सरबमङ्गलाकलाकदंबमङ्गरी

रसप्रवाहमाधुरी बिज्जुंभगामधुवरतम् ।

स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं

गजान्तकान्तकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥ १०॥

जयत्रदभ्रिभ्रमभ्रमदभ्रुजङ्गमश्वस-

-दिबनिरगमत्रेमस्फुरत्करालतालहबयवाट् ।

धिमिद्धिमिद्धिमिधबनन्मुदङ्गुतुङ्गमङ्गल

धबनिक्रमप्रवरितत प्रचण्डताण्डवः शिवः ॥ ११॥

दृषद्विचित्रतल्पयोरभुजङ्गमोक्तिकस्रजोर-

-गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपङ्कपङ्कयोः ।

तृशारविन्दचम्बुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः

समप्रवृत्तिकः (समं प्रवरतयन्मनः) कदा सदाशिवः भजे ॥ १२॥

कदा निलिम्पनिरवरीनिकुङ्ककोटरे बसन्

विमुक्तदुरमतिः सदा शिवः स्थमङ्गलिं बहन् ।

विमुक्तलोललोचनो ललामताललङ्कः

शिबेति मंत्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥ १३॥
 इदम् हि नित्यमेवमुक्तमुक्तमोक्तमं स्तवः
 पठन्स्मरन्ब्रूवन्नरो विशुद्धिमेतिसंततम् ।
 हरे गुरो सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिः
 विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिंतनम् ॥ १४॥
 पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः
 शंभुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।
 तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
 लक्ष्मीं सदैव सुमुखिं प्रददाति शंभुः ॥ १५॥
 ॥ इति श्रीरावणविरचितं शिवताण्डवस्तोत्रं संपूर्णम्॥

This stotraM is in आर्यागीति; a variant of the आर्या.
 Please count the syllables! There should be 32 per half shloka.
 If not then there should be a mistake somewhere...
 Please try the 2nd half of both the 8th & 9th shlokas first.
 They have already been broken. They are very rhythmic!
 32 = 2+2, -, 2+2, -, 2+2, -, 2+2, -, 2+2,
 --, 2+2, -, 2+2, -, 2+2, ---
 then next half of the shloka following the same pattern. The '-
 ' are the
 duration of the pauses.'2+2' represent 2 syllables + 2 syllables in quick
 succession.
 The last shloka is not in आर्यागीति. It has been broken at the pause for
 each half verse.